श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

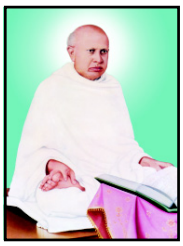

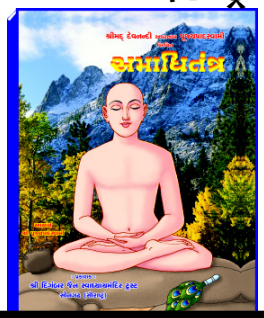

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ४ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ४५ से ५५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. १-०४-२०१९

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न–१ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पके आगे ✓ निशानी करें। (कोई भी पांच) १०

(१) अंतरात्माको अस्थिरतापूर्वक जो राग-द्वेषके परिणाम होते है वह किस प्रकारका दोष है ? (चारित्र, श्रद्धा)

(२) आत्मस्वरूपके परिपक्व अभ्याससे आत्मस्वरूपका यथार्थपनेसे ज्ञान होता है तब उसे बाह्य विषय कैसे लगते हैं ? (दुःखरूप, सुखरूप)

(३) ज्ञानी परमात्मा चिरकाल तक स्वयंका उपयोग किसमें रोकनेकी भावना करता है ? (व्यवहारकार्य, आत्मकार्य)

(४) रागादिकी अनुत्पत्ति वह क्या है ? (भेदज्ञान, त्याग)

(५) बाह्य पदार्थोंका ग्रहण-त्याग नहीं हो सकने पर भी उसका ग्रहण-त्याग मानना वह क्या है ? (मूढ़ता, ज्ञान)

(६) अनासक्त आत्मा स्वयंका स्वरूप किसको मानता है ? (बाह्य पदार्थ, ज्ञानज्योति)

(७) स्त्री, पुत्र आदि पदार्थ विश्वासयोग्य, रम्य और सुखदायक किसे लगते है ? (अज्ञानी, ज्ञानी)

प्रश्न–२ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर 'हा' अथवा 'नहीं'में दिजीये। १०

(१) अज्ञानी बहिरात्मा अनादिसे शरीरके प्रति संस्कार होनेसे इन्द्रिय विषयोमें रमता है। .....

(२) साधक सविकल्पदशामें जो आहार, उपदेश आदिके कार्यमें जुड़ता है उस समय ज्ञानस्वभावको भूलकर तन्मयपनेसे जुड़ता है। .....

(३) ज्ञान स्वभावरूप ज्योति क्रोध कषायादि अंधकारका नाश करनेवाली है। .....

(४) इन्द्रिय विषय सुखरूप नहीं होने पर भी अज्ञानी उसमें लीन रहता है उसका कारण अनादि शरीरके साथका सम्बन्ध है। .....

(५) ज्ञानी या अज्ञानी किसीको बाह्य पदार्थोंका ग्रहण-त्याग उसके आधीन नहीं हैं। .....

प्रश्न : ३ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर दो-तीन लाईनमें दिजीये । **१०**

(१) बहिरात्मा किसमें आत्मबुद्धि करता है ?

(२) समस्त परद्रव्योंके और परभावोंका स्वयं त्याग किस प्रकार होता है ?

(३) ज्ञानी वाणी, कायाकी क्रियाकी ओरसे उपयोग हटाकर किसमें रोकता है ?

(४) ज्ञानी अंतरात्माको किसके बीचमें यथार्थ भेदज्ञान होता है ?

(५) अंतरात्मा बाह्य पदार्थोंसे उदासीन होकर मध्यस्थ भाव धारण करनेकी भावना किसलिये करता है ?

प्रश्न : ४ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर "अ" अक्षरसे प्रारंभ होते है, उसके सही उत्तर दिजीये । **१०**

(१) शरीर, वाणी आदि परद्रव्योंको देहकी क्रियासे भिन्न कौन जानता है ? .....

(२) भाव इन्द्रियोंको नियंत्रित करके क्या होनेसे ज्ञान स्वरूप आत्माको देखा जा सकता है ? .....

(३) सम्यग्दृष्टि विषय भोग प्रति एवं संसारके कार्योंमें जुड़ जाय तो भी किसभावसे जुड़ते है ? .....

(४) बाह्य पदार्थोंका ग्रहण-त्याग नहीं होता होने पर भी ग्रहण-त्यागकी मान्यता किसे होती है ? .....

(५) आत्मप्राप्तिकी भावना करनेसे इन्द्रिय विषयसुखकी इच्छा नष्ट होनेसे जीवको क्या प्राप्त होता है ? .....

प्रश्न-५ : नीचे दिये तीनमेंसे कोई भी एक विषय पर अंदाजित २० लाईनमें निबन्ध लिखें । १०

(१) इन्द्रिय विषय सुखरूप लगने पर भी दुःखरूप क्यों कहा जाता है उनके कारण बतलाओ ।

(२) अंतरात्मा अस्थिरताजनित राग-द्वेषका त्याग किस प्रकार करता है वह बतलाओ ।

(३) आत्मस्वरूपकी भावना किस प्रकार करना और उसका फल क्या है वह बतलाओ ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र-४ के उत्तरपत्र ता. २०-५-२०१९ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।